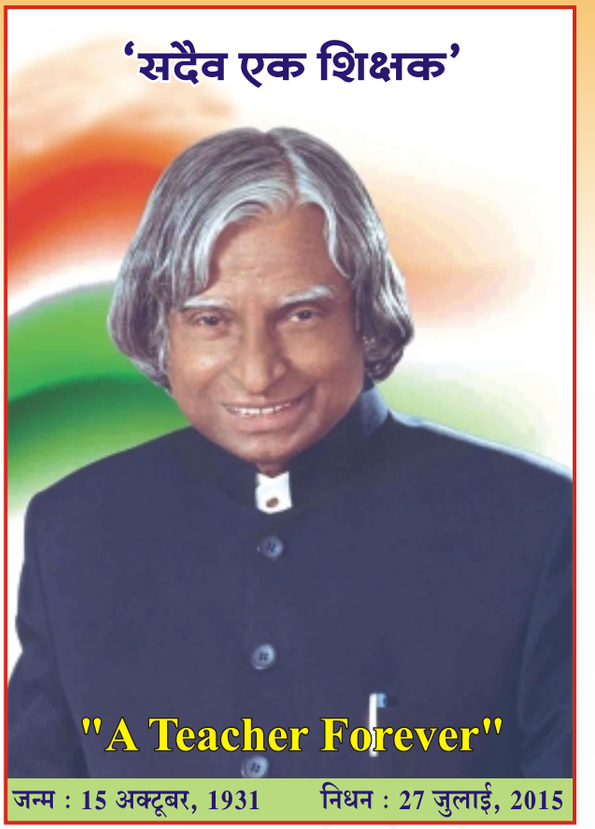
डॉ. कलाम विशेषांक

राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका

The Rajasthan BOARD JOURNAL of Education



"शिक्षण एक महान् पेशा है
जो किसी व्यक्ति के
चरित्र, क्षमता और भविष्य
को आकार देता है। "
-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर
Board of Secondary Education Rajasthan, Ajmer
www.rajeduboard.nic.in



विद्यार्थियों एवं युवाओं के लिए दस सूत्रीय शपथ

1. मैं समझता हूँ कि छोटा उद्देश्य अपराध है। मैं अपने जीवन में एक महान् लक्ष्य रखूँगा और उसे प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करूँगा। मैं लगातार ज्ञान प्राप्त करूँगा। मैं लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ रहूँगा।
2. मैं सत्यनिष्ठा के साथ काम करूँगा और सत्यनिष्ठा के साथ सफल होऊँगा।
3. मैं अपने परिवार का अच्छा सदस्य बनूँगा, समाज का अच्छा सदस्य बनूँगा, अपने राज्य का अच्छा सदस्य बनूँगा, देश का अच्छा सदस्य बनूँगा और विश्व का अच्छा सदस्य बनूँगा।
4. मैं हमेशा किसी एक के जीवन को सुरक्षित या सफल बनाने की कोशिश बिना किसी जाति, पंथ, भाषा, धर्म या राज्य के भेदभाव के करूँगा। मैं कहीं भी रहूँ, एक विचार हमेशा मेरे मन में रहेगा 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ'।
5. मैं शराब, धूम्रपान और जुए का आदी कभी भी नहीं होऊँगा। मैं हमेशा कोशिश करूँगा कि शराब, धूम्रपान और जुए के आदी कम से कम पाँच लोगों की लत छुड़ा सकूँ और उनकी मदद करूँगा कि वे अच्छा जीवन व्यतीत करें।
6. मैं हमेशा समय के महत्त्व को याद रखूँगा। मेरे जीवन का उद्देश्य 'मेरे उड़नपंख के दिन, व्यर्थ व्यय न हों'।
7. मैं अपने पड़ोस में कम से कम पाँच पौधे लगाऊँगा और उनका पोषण करूँगा। मैं हमेशा अपने गाँव, शहर, और राज्य को स्वच्छ रखने का कार्य करूँगा, जिससे मेरी पृथ्वी स्वच्छ और हरी होगी। मैं अपने गाँवों या शहरों के टैंकों, झीलों को पुनर्जीवित करने का कार्य करूँगा।
8. मैं अपने देश के युवा के रूप में कार्य करूँगा, साहस के साथ सभी कार्यों की सफलता के लिए और दूसरे के कार्यों की सफलता का आनंद लूँगा।
9. मैं जैसा युवा हूँ ऐसा ही मेरा विश्वास, और पुराना जितना मेरा शक। इसलिये, मैं अपने हृदय में विश्वास का दीपक प्रकाशमय रखूँगा।
10. मेरा राष्ट्रीय ध्वज मेरे हृदय में लहराता है और मैं अपने देश के लिए महिमा गाऊँगा।

STATE SYMBOLS OF RAJASTHAN



State Tree of Rajasthan

Khejari (Prosopis Cineraria) is the official tree of Rajasthan State.



State Dance of Rajasthan

Ghoomar is the official dance of Rajasthan State.



State Game of Rajasthan

Basketball is the official Game of Rajasthan State.



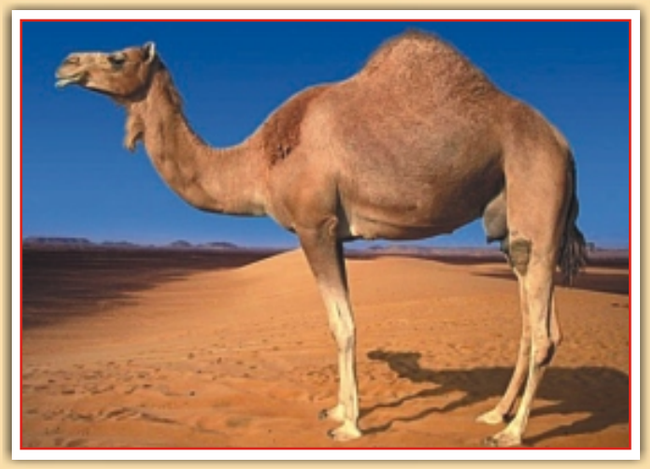
State Flower of Rajasthan

Rohida (Tecomella undulata) is the official state Flower of Rajasthan State.



State Bird of Rajasthan

Godawan or Great Indian Bustard is the official state bird of Rajasthan.



State Animal of Rajasthan

Camel is the official state Animal of Rajasthan.

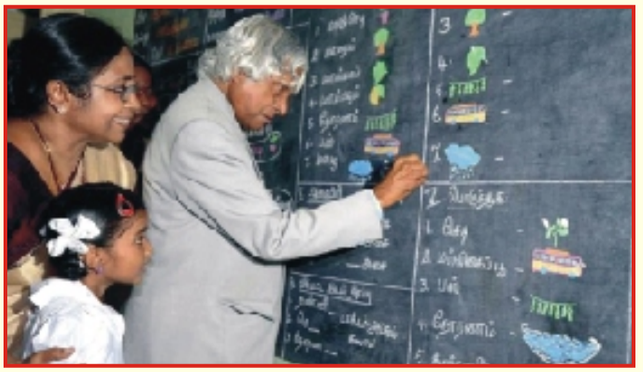


State Animal of Rajasthan

Chinkara is also the official state Animal of Rajasthan.

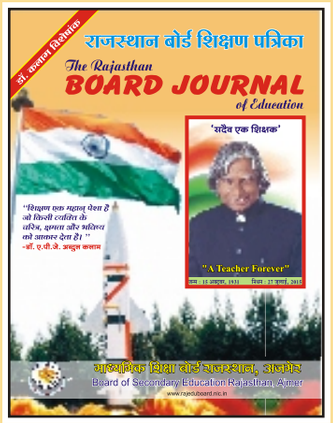
RNI No. 10463/65

OATH FOR TEACHERS



1. First and foremost, I will love teaching. Teaching will be my soul.
2. I realize that I am responsible for shaping not just students but ignited youths who are the most powerful resource under the earth, on the earth and above the earth. I will be fully committed for the great mission of teaching.
3. I will consider myself to be a great teacher, only when I can, lift the student average to the best performance by way of my special teaching.
4. All my actions with my students will be with kindness and affection like a mother, sister, father or brother.
5. I will organize and conduct my life, in such a way that my life itself is a message for my students.
6. I will encourage my students to ask questions and develop the spirit of inquiry. So that they blossom into creative enlightened citizens.
7. I will treat all the students equally and will not support any differentiation on account of religion, community or language.
8. I will continuously build the capacities in teaching so that I can impart quality education to my students.
9. I will celebrate the success of my students, with great Elan.
10. I realize by being a teacher, I am making an important contribution to all the national development initiatives.
11. I will constantly endeavour to fill my mind, with great thoughts and spread the nobility in thinking and action.

Published by : Secretary, Board of Secondary Education Rajasthan, Ajmer – Printed at : Rawat Printers & Stationers, J-97, Adarsh Nagar, Jaipur



अध्यक्ष
प्रो. बी.एल. चौधरी

सचिव
श्रीमती मेघना चौधरी

सलाहकार मण्डल
डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली
डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय
श्री हरिदत्त शर्मा
डॉ. एस.पी. सिंह
डॉ. सुभाष कौशिक
श्री मनवीर सिंह चूण्डावत

सम्पादक मण्डल
निदेशक अकादमिक व सम्पादक
डॉ. प्रताप भानु सिंह

उप निदेशक (जनसम्पर्क)
श्री राजेन्द्र गुप्ता

वरिष्ठ सहायक निदेशक-अकादमिक
डॉ. मनोज उपाध्याय

मुद्रक
रावत प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, जयपुर

इस पत्रिका में प्रस्तुत विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं उनसे मा.शि.बो. राजस्थान का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

निर्गमन माह-जनवरी, 2016

राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका

(संयुक्तांक)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर-305001

RNI : 10463/65 अप्रेल 2015 से सितम्बर 2015 खण्ड : 60 अंक : 1 से 2

दिशाबोध | वैचारिकी | सम्पादकीय

अनुक्रम

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पर विशेष सामग्री

		पृष्ठ संख्या
श्रद्धांजलि : अग्नि की उड़ान-सितारों तक	-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली	1
कर्मयोगी कलाम (कविता)	-पं. नरेन्द्र मिश्र	1
कलाम के प्रति श्रद्धांजलि	-प्रो. धर्मवीर	2
राष्ट्र रहेगा सदा ऋणी	-एस. गुरूमूर्ति	5
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : जीवन वृत्त		7
डॉ. कलाम के 11 सिद्धान्त : जिनसे सीखा राष्ट्र ने		9
डॉ. कलाम की कुछ कविताएं		10
बचपन की सीख	-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	12
मेरा स्वप्न	-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	15
एक समृद्ध राष्ट्र का उद्भव	-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	17
यों पहुँचेगा भारत परम वैभव के शिखर पर	-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	19
Seven Turning Points of my life	-Dr A.P.J. Abdul Kalam	21
My Teacher	-Dr A.P.J. Abdul Kalam	25
My Mother	-Dr A.P.J. Abdul Kalam	28
List of Books Published-Dr A.P.J. Abdul Kalam		29
डॉ. कलाम के महत्त्वपूर्ण संदेश		32

विशेष परिशिष्ट

वन्देमातरम्	-प्रो. बी.एल. चौधरी व डॉ. शंकर चौधरी	34

अन्य लेख व सामग्री

शीलः शाश्वत मूल्यों का आधार	- हनुमान सिंह राठौड़	42
बदलते परिवेश में राष्ट्रीय शिक्षा की परिकल्पना	- बजरंग प्रसाद मजेजी	45
विभिन्न संस्थाओं के संस्कृत ध्येय वाक्य	- डॉ. अभिलाषा चौधरी	48
स्वच्छता से स्वास्थ्य, स्वास्थ्य से समृद्धि	- सीताराम उपाध्याय	51
शिक्षा में मानवीय मूल्यों की सुगबुगाहट	- डॉ. दाऊदयाल गुप्ता	53
पर्यावरण संरक्षण में विद्यालय की सशक्त भूमिका	- डॉ. कल्पना शर्मा	55

- गुरु की महिमा – सुशीला चण्डालिया 58
- डॉ. डी.एस. कोठारी–एक आध्यात्मिक वैज्ञानिक – प्रो. एम.एल. कालरा 59
- विवेकानन्द का सूत्र : लक्ष्य के प्रति सजग रहो – उमेश कुमार चौरसिया 63
- भारतीय संहिता में विभिन्न कौटुम्बिक सम्बन्ध एवं आदर्श – डॉ. शिवराज भारतीय 64
- शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के सकारात्मक प्रयास – अरूण कुमार शर्मा 66
- शैक्षिक कारवां – अमित शर्मा 67
- चिकित्सा परामर्श : सिरदर्द – डॉ. एच.एन.एस. भटनागर 68
- शिक्षा परामर्श : विदेश में शिक्षा–टॉफेल – डॉ. शंकर चौधरी 70
- प्रतिवेदन : विद्यार्थियों की राज्य स्तरीय सर्जनात्मक प्रतियोगिताएं – डॉ. मनोज कुमार उपाध्याय 71
- Cultural Education Know thy Mother, Sister and Daughters - Kailash Vihari Vajpeyee 73
- Relation of Discipline with Teaching - Dr. Devendra Sharma 'Dixit' 74
- How to Unlock and Release Creative Talent - P.D. Singh 75
- Small Lessons make you great - Vivek Sharma 77
- Career Guidence : GRE (Graduate Record Examination) 78

स्थायी स्तम्भ

- अभिव्यक्ति
  - (1) हम ऐसी शिक्षा लाएंगे..... – जगदीश पुरोहित 81
  - (2) चमकेगा फिर सितारा – हरिओम गौतम 81
- बोर्ड समाचार
  1. विद्यार्थी सर्जनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन 82
  2. बोर्ड प्रबंध मण्डल की बैठक 83
  3. बोर्ड शिक्षण पत्रिका के अंक का विमोचन 84

कृपया पत्र व्यवहार सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान,
अजमेर–305 001 के नाम सम्बोधित कीजिए।

• PBX Tel. 0145-2632870, 2632871, 2632872, 2632873
• E-mail : secy-boser-rj@nic.in • Web Site : www.rajeduboard.nic.in एवं
E-mail : rbje@rediffmail.com • Fax : 0145-2627394 ग्राम–राजसैकबोर्ड

Subscription	Annual : Rs. 500/- (For Schools & Others) Rs. 100/- (For Teachers)

दिशा-बोध



डॉ. कलाम : एक आदर्श व्यक्तित्व

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का नाम आते ही उनके कहा ये संदेश स्मृतिपटल पर उभरता है- ''स्वप्न,स्वप्न,स्वप्न। स्वप्न विचारों में परिवर्तित होते हैं और विचार कार्यों में परिणत होते हैं।'' वे बार-बार यही कहते थे कि सपने देखो और जागती आँखों से सपने देखो। स्वप्न ही हमें भविष्य की दृष्टि और लक्ष्य दिखाता है। स्वप्न देखेंगे तो उसे पूरा करने की ओर हमारा विचार-चिन्तन शुरू होगा, फिर विचार दृढ़ निश्चय और संकल्प की ओर बढ़ते हुए हमें सकारात्मक-सार्थक कार्य की ओर ले जाएगा। डॉ. कलाम यह भी कहते थे-''छोटा लक्ष्य एक अपराध है।'' इसका अर्थ यही है कि हमें अपने जीवन के लिए जिस लक्ष्य को निर्धारित करना है वह केवल सामयिक या त्वरित स्वार्थपूर्ति के लिए नहीं होना चाहिए। हमें बड़ा लक्ष्य अर्थात स्वयं को श्रेष्ठता की ओर ले जाते हुए अपने समाज और राष्ट्र को भी प्रगति की ओर ले जाने का संकल्प लेना है। ऐसे सार्थक लक्ष्यपूर्ण जीवन की यह संकल्पना ही किसी व्यक्ति को मनुष्यत्व की ओर ले जा सकती है और किसी देश को प्रगति के उज्ज्वल शिखर की ओर ले जा सकती है।

वर्तमान भौतिकवादी युग में डॉ. कलाम का जीवन एक आदर्श के समान हमारे समक्ष उपस्थित है। उन्होंने जो भी दूसरों से कहा उसे पहले अपने जीवन में अपनाया। सादा जीवन और उच्च विचार की उक्ति उनके जीवन में पूर्णत: परिलक्षित होती है। बच्चों के प्रिय डॉ. कलाम का यही प्रयास रहता था कि वे जहाँ भी जाएं बच्चों और युवा विद्यार्थियों से मिलें, उनसे अनौपचारिक चर्चा करें, उनके प्रश्नों और भ्रांतियों का निवारण करें। वे लिखते भी हैं-''...उनके साथ अपने विचारों के आदान-प्रदान के द्वारा मैं उनके मस्तिष्क में विज्ञान के लिए प्रेम और उसके द्वारा एक विकसित भारत प्राप्त करने के लिए मिशन की भावना प्रज्वलित कर सकता हूँ।'' युवाओं के बीच शक्ति का संचार करने वाले डॉ. अब्दुल कलाम चाहते थे कि नयी पीढ़ी उनके संदेश ग्रहण करे और उसे दूसरे बच्चों तक फैलाए। युवा पीढ़ी को देश की पूँजी, भविष्य और कर्णधार मानते हुए वे उम्मीद किया करते थे कि युवा एक विकसित देश में रहने का सपना देखते रहें, उसका विचार करते रहें और उसे कार्यरूप करने में जुट जाएं। भारत को वर्ष 2020 तक आर्थिक रूप से विकसित राष्ट्र बनाने की उनकी दृष्टि का आधार भी संभवत: यही है।

'खुशहाल व समृद्ध विश्व' पुस्तक में वे लिखते हैं कि भारत को विकसित देश के रूप में बदलने का आशय है कि देश का हर नागरिक निर्धनता की रेखा से पर्याप्त ऊपर हो, शिक्षा और स्वास्थ्य का उच्च स्तर हो, राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित हो और कुछ निश्चित प्रमुख क्षेत्रों में मूल क्षमताएँ स्तरीय सामग्री के उत्पादन करने योग्य हों, जिनका घरेलू खपत और प्रतिस्पर्धात्मक रूप से निर्यात किया जा सके और इस सबसे बढ़कर, सभी नागरिक समृद्ध हों। स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा था-''भारत एक बार फिर समृद्धि तथा शक्ति की महान् ऊँचाइयों तक उठेगा और अपने समस्त प्राचीन गौरव को पीछे छोड़ जाएगा।'' यह तभी संभव हो सकेगा जब भारत में उपलब्ध विश्व की सर्वाधिक युवा जनसंख्या इस लक्ष्य को हासिल करने का दृढ़ निश्चय कर सतत् कर्म में जुट जाएगी।

इसमें शिक्षकों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका पर भी ध्यान देने की बात उन्होंने कही है। विद्याार्थियों के बीच वे स्वयं भी राष्ट्रपति होने के साथ-साथ सदैव एक अभिभावक और एक शिक्षक की भूमिका में रहते थे। अधिकांशत: उपदेशात्मक भाषा के प्रति बच्चों की रूचि नहीं रहती है किन्तु जब वे बच्चों से बात करते, सभी उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनते भी और जीवन में उतारने की प्रेरणा भी लेते। निश्चय ही जब शिक्षक अपने विद्यार्थियों से अपनेपन के साथ व्यवहार करेंगे तो वे उनकी बात सुनेंगे, समझेंगे और अमल करेंगे। इसी पर चिन्तन करने की आज आवश्यकता है। हम बच्चों से अपेक्षा तो बहुत करते हैं पर उन्हें उन अपेक्षाओं पर खरा उतरने के योग्य बनाने का कोई विशेष प्रयत्न नहीं करते। विद्यार्थियों की शारीरिक व बौद्धिक क्षमता को विकसित करने का दायित्व भी तो शिक्षक का ही है। शिक्षक अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वहन करे तो फिर श्रेष्ठ विद्यार्थियों का निर्माण होना निश्चित ही है।

राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका का यह अंक एक महान् कर्मयोगी और स्वप्नद्रष्टा डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम को समर्पित करते हुए मेरा विश्वास है कि हमारे विद्यार्थी और शिक्षक डॉ. कलाम के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर स्वजीवन, समाज और राष्ट्र का उत्थान करने की ओर अग्रसर होंगे।

(प्रो. बी.एल. चौधरी)
अध्यक्ष

बोर्ड गतिविधियाँ



बोर्ड प्रबन्ध मण्डल की बैठक में उपस्थित अधिकारीगण



बोर्ड शिक्षण पत्रिका के संयुक्तांक का लोकार्पण करते हुए अतिथि एवं अधिकारीगण



स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त, 2015 के अवसर पर बोर्ड परिवार के साथ बोर्ड अध्यक्ष प्रो. बी.एल. चौधरी

वैचारिकी



श्रेष्ठ विद्यार्थी का निर्माण करें

ज्ञान क्या है? जिस प्रकार दीपक का प्रकाश, अंधकार को दूर कर वहाँ स्थित सभी वस्तुओं को न केवल प्रकट करता है, वरन् उन सभी वस्तुओं के रूप, रंग, आकार इत्यादि को भी हमारे समक्ष स्पष्ट करता है, दीपक के प्रकाश में हम उन वस्तुओं को देख भी सकते हैं और उनका यथायोग्य उपयोग भी कर सकते हैं, वैसे ही ज्ञान किसी भी व्यक्ति, वस्तु, तथ्य या ऐसा कहें कि किसी भी भौतिक अस्तित्व का बोध कराता है।

आत्मा ज्ञान स्वरूप है। जब आत्मा प्रकाशित होती है तो उस आत्मप्रकाश की लौ में हमें सकल जगत में स्थित व्यक्ति, वस्तु, तथ्य के भौतिक अस्तित्व के साथ उसके आलौकिक अस्तित्व का आभास भी होने लगता है। आत्मा के जागृत होने पर, प्रकाशित होने पर जो ज्ञान हमें प्राप्त होता है, वही सच्चा ज्ञान है। यह आत्मज्ञान ही हमें सत्-असत्, गुण-दुर्गुण, अच्छा-बुरा, सात्त्विक-तामसिक इत्यादि का यथार्थ बोध कराता है। जीवनानन्द के लिए, शांति, प्रेम, सौहार्द, सुख के लिए इसी आत्मज्ञान की हमें आवश्यकता है।

आज आवश्यकता इसी बात की है कि आत्मज्ञान का प्रकटीकरण हो। इस दृष्टि से शिक्षकों का यह दायित्व है कि वे विद्यार्थियों का परिचय उनकी अपनी आत्मा से करवाएं। जब विद्यार्थी अपनी आत्मा को जान जाएंगे और उसे जागृत करने, प्रकाशित करने की ओर अग्रसर हो जाएंगे तभी उन्हें जीवन की सार्थकता, श्रेष्ठता और सही लक्ष्य का मार्ग मिल सकेगा। आत्मा को जानने-समझने और प्रकाशित करने का उपाय है-ध्यान। वर्तमान भौतिकवादी, दूषित प्रतियोगिता और भाग-दौड़ के तनाव के इस युग में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के लिए ध्यान अत्यन्त आवश्यक है। इस युग की अधिकतर शारीरिक व मानसिक समस्याओं का निदान केवल ध्यान के द्वारा ही संभव है।

ध्यान का नियमित अभ्यास करने से विद्यार्थियों का आत्मा रूपी दीपक प्रज्ज्वलित होकर उनकी बुद्धि और हृदय को प्रकाशित कर शक्तिशाली तथा दूसरों के प्रति समरस बना देगा। एक ऐसा अद्भुत सामंजस्य उत्पन्न कर देगा जिससे किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान की शीतल तरंगे भी उनमें सहज प्रवाहित होने लगेंगी। कम समय में अधिक ज्ञान की सहजता हो जाएगी। स्वयं ही अपनी समस्याओं का हल ढूंढने में सक्षम हो सकेंगे, निडर और परिश्रमी बन जाएंगे। इसलिए शिक्षकों को विद्यार्थियों में नियमित ध्यान की आदत डालने का प्रयास करना चाहिए।

दूसरी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है समय के महत्त्व को समझने की। शिक्षक और अभिभावक स्वयं समयबद्ध व अनुशासित रहेंगे तो विद्यार्थी भी वैसा ही बनेगा। प्रत्येक कार्य समय पर पूरा करने, अपनी पुस्तकों व वस्तुओं को व्यवस्थित रखने की आदत डालें। विद्यार्थियों का भोजन भी नियमित व पौष्टिक हो। भोजन उन्हें त्वरित ऊर्जा प्रदान करने वाला हो, ऐसा न हो कि उनकी सारी ऊर्जा पाचन में ही खर्च हो जाए। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रह सकता है, इसका सदैव स्मरण रखें।

विद्यार्थियों के मध्य मूल्यपरक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना भी आवश्यक है। प्रतियोगिताएं शारीरिक-बौद्धिक परिश्रम और मानवीय मूल्यों की महत्ता पर आधारित हों। परस्पर प्रतिस्पर्धा से उनके ज्ञान और बुद्धि का तो विकास होगा ही, उनका आत्मबल भी बढ़ेगा। प्रतियोगिता में आगे बढ़ने की ललक, जीतने का हौसला उनके आत्मविश्वास को पुष्ट करेगा। यहाँ इस बात का भी ध्यान शिक्षकों को रखना होगा कि जो विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन करे उसका उत्साहवर्द्धन करें और जो प्रतियोगिता में पिछड़ जाए उसकी आगे आने में सहायता भी अवश्य करें। इससे विजेता विद्यार्थी में श्रेष्ठता को बनाये रखने का विश्वास और पिछड़ गए विद्यार्थी में श्रेष्ठ बनने का जोश उसे भविष्य में अच्छे प्रदर्शन की प्रेरणा देगा।

मुझे विश्वास है कि हमारे जागरूक शिक्षक ध्यान के माध्यम से विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता को विकसित करने, जीवन मूल्यों को स्थापित करने, उनके परिश्रम-आत्मबल-हौसले को सम्बल प्रदान करते हुए सकारात्मक ऊर्जा लिए सार्थक लक्ष्य के प्रति सजग श्रेष्ठ विद्यार्थियों के निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे।

(मेघना चौधरी)
सचिव

सम्पादकीय



संस्कार से आती है श्रेष्ठता

संस्कार किसी भी व्यक्ति की पहचान होते हैं। अर्थात् किसी भी व्यक्ति का आचरण ही उसके संस्कारों का प्रगटीकरण होता है। भारतीय संस्कृति में तो यही माना गया है कि संस्कारों के बिना मनुष्य जीवन ही बेमानी है। संस्कारों के पालन से ही बनती है संस्कृति, जो किसी भी समाज या राष्ट्र की पहचान होती है। हमारे शास्त्रों में दो प्रकार के संस्कारों की बात कही गयी है। एक नैसर्गिक संस्कार और दूसरे उपार्जित संस्कार।

नैसर्गिक संस्कार का अर्थ है वे संस्कार जो उत्पन्न होने के साथ ही मिल जाते हैं। जैसे चिड़िया का चहकना, पेड़ का फल देना, गाय का दूध देना इत्यादि। ये सभी प्रकृति प्रदत्त होते हैं, इसीलिए इन पर किसी का कोई जोर नहीं। कोई भी सप्रयास न तो इन्हें घटा सकता है और न ही बढ़ा सकता है। नैसर्गिक संस्कार जैसे जन्मसमय से मिले हैं वैसे ही सदा रहेंगे।

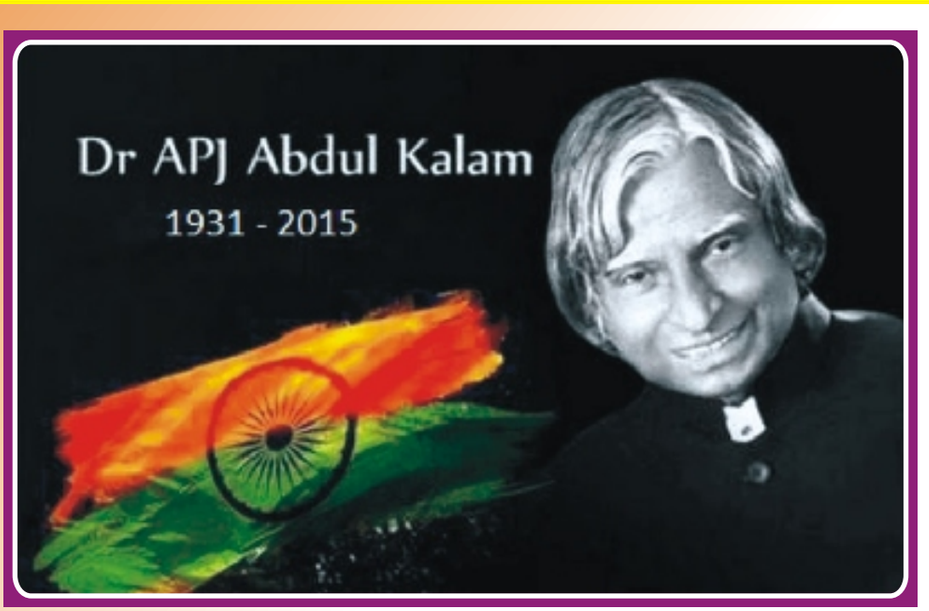
उपार्जित संस्कार का अर्थ है वे संस्कार जो सप्रयास प्राप्त किये जा सकते हैं। ये किसी को भी उत्पन्न होने पर प्राप्त नहीं होते। इन्हें अपने प्रयत्नों के द्वारा हासिल करना होता है। जैसे माता-पिता अपनी संतान को बड़ा होने के साथ-साथ बोलना, चलना इत्यादि सिखाते हैं। गुरुजन या शिक्षक अपने विद्यार्थियों को पुस्तकों के माध्यम से जो ज्ञान देते हैं। समाज में रहने से, सामाजिक आयोजनों, पर्वों, उत्सवों से जो कुछ सीखने को मिलता है। इस प्रकार अनेक साधन हो सकते हैं जिनसे अनेक प्रकार के संस्कार उपार्जित किये जा सकते हैं।

जिन संस्कारों के विषय में हमें आज चिन्तन करने की आवश्यकता है वे हैं उपार्जित संस्कार। पश्चिमी अन्धानुकरण, ऐतिहासिक गौरव की पूर्ण जानकारी का अभाव, अपनी संस्कृति की समझ की कमी, मानवीय विकृतियों का मायाजाल इत्यादि ऐसे कई कारण हैं जिनसे नयी पीढ़ी संस्कार शून्य होती दिखती है। आज अभिभावकों और शिक्षक वर्ग को इसी पर चिन्तन करने की जरूरत है कि हम नयी पीढ़ी को क्या सिखाएं, उनमें कौनसे संस्कार होने चाहिए। यह तो सर्वविदित ही है कि संस्कार किसी भी मनुष्य को सभ्य नागरिक बनाते हैं। सच्चे अर्थ में मनुष्य बनाते हैं। वे संस्कार ही हैं जिनके होने पर हम किसी को अच्छा और किसी को दुष्ट कहते हैं। सुसंस्कारित विद्यार्थी ही श्रेष्ठ मनुष्य बनेंगे, अच्छे नागरिक बनेंगे और तभी हमारा राष्ट्र भी उन्नति की ओर अग्रसर हो सकेगा।

चरित्र, बोली, परस्पर व्यवहार, सहयोग, सौहार्द, सहानुभूति, त्याग, श्रद्धा, पहनावा-ये ही वे संस्कार हैं जिनके होने से मनुष्य में श्रेष्ठता आती है। जीवन में शिक्षा का जितना महत्त्व है, संस्कारों का महत्त्व उससे कहीं अधिक ही माना जा सकता है। बच्चों को आज अच्छी से अच्छी शिक्षा देने के प्रति सभी अभिभावक जागरूक रहते हैं; किन्तु इसके साथ-साथ बच्चों में अच्छे संस्कार स्थापित करने के प्रति भी सजग रहने की जरूरत है। यह अभिभावक और शिक्षक का मिलाजुला दायित्व है। अभिभावक घर-परिवार-समाज में इस बात का ध्यान रखें कि बच्चे अपनी संस्कृति और संस्कारों से जुड़े रहें और शिक्षकों को देखना होगा कि अध्ययन-अध्यापन के साथ वे बच्चों में संस्कारों को डालने का प्रयास भी अवश्य करें। हमें यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि संस्कारों से ही जीवन में श्रेष्ठता आती है, संस्कार ही विद्यार्थी को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा सकते हैं, उसका जीवन उत्कृष्ट बना सकते हैं।

(डॉ. प्रताप भानु सिंह)
सम्पादक एवं निदेशक (अकादमिक)

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम.... स्मृति शेष



जन्म : 15 अक्टूबर, 1931 निधन : 27 जुलाई, 2015



डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अपने माता–पिता और भाई–बहनों के साथ (मां के बगल में)



डॉ. विक्रम साराभाई के साथ युवा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम...



डॉ. सतीश धवन के साथ एसएलवी–।।। रिव्यू मीटिंग में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



वर्ष 1981 में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नीलम संजीवा रेड्डी के हाथों देश का दूसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान पद्मभूषण ग्रहण करते डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम.... स्मृति शेष



पोखरन परमाणु परीक्षण स्थल पर पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा तत्कालीन रक्षामंत्री श्री जॉर्ज फर्नांडिस के साथ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम...



डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को एकांत में वीणा वादन बहुत प्रिय था



पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सैटेलाइट की प्रतिकृति के साथ



डॉ. कलाम बच्चों में अच्छे संस्कार और वैज्ञानिक सोच पैदा करना चाहते थे, वे जब कभी कहीं जाते थे तो बच्चों से मिलना नहीं भूलते थे। उनके दौरों में बच्चों से वार्तालाप एक प्रमुख कार्य हुआ करता था। अपने जीवन के आखिरी दिन उन्होंने आईआईएम शिलांग में बच्चों को ही संबोधित करते-करते अंतिम सांसें ली...



रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमिर पुतिन और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति श्री नेल्सन मंडेला के साथ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम